पौलुस की इफिसियों को पत्री

पुनर्कथित,
व्याख्यायित,
आज के लिए।

GOOD NEWS

पौलुस की इफिसियों को पत्री

पुनर्कथित, व्याख्यायित, आज के लिए।

Hans-Jörg Ronsdorf

जितना ऊँचा आकाश है

पुस्तक-परिचय

इफिसियों की पत्री को अपने शब्दों में फिर से कहा गया है, अर्थात् समझाते हुए प्रस्तुत किया गया है। पाठ की मात्रा किसी पारंपरिक और शब्दशः बाइबल-अनुवाद के मूल बाइबल-पाठ से लगभग तीन गुना है। यह पाठ बाइबल के पाठ का स्थान नहीं लेता और न ही उसे सुधारता है, बल्कि उसे बेहतर समझने और जीवन में लागू करने के लिए एक सहायता के रूप में है।

पहला संस्करण अक्तूबर 2019 (जर्मन संस्करण)

© Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित

www.hans-joerg-ronsdorf.de

Albis 6 ½

87477 Sulzberg

hj-ronsdorf@t-online.de

जर्मन संस्करण का ISBN 978-3-9820715-2-7

इफिसुस के चेलों के नाम – भूमिका

इस पौलुस-पत्री को मैं जो आदर्श-वाक्य देता हूँ, “जितना ऊँचा आकाश है”, वह खोखले शब्द नहीं है। जैसे किसी ऊँचे पर्वत से दृष्टि हर दिशा में क्षितिज तक जाती है, वैसे ही यह पत्री सब दिशाओं में देखने का एक ऊँचा स्थान है। जहाँ भी देखें, मसीह में, उसके पुत्र में, परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम सामने आता है। यह **अनुपम अनुग्रह है, जो बीती हुई अनन्तता में आरंभ होता है और परमेश्वर और मसीह के अनन्त राज्य में, उसके नए संसार में ले जाता है।** यदि कोई इस पत्री को एक ही बैठक में पढ़े, तो वह बार-बार रुककर सोचेगा: ऐसा परमेश्वर पाने के हम योग्य नहीं थे।

अन्य पाठों का मूल्य घटाए बिना मैं इस पत्री को नए नियम का शिखर कहूँगा। केवल मैं ही इस पर मोहित नहीं हुआ हूँ। धर्मविज्ञानी इसे इस प्रकार पुकारते हैं: “पौलुस के लेखों का मुकुट”, “सबसे दिव्य रचना”, “सब पत्रियों में सबसे राजसी”, “यह पत्री शुद्ध संगीत है ... जो हम यहाँ पढ़ते हैं, वह गाता हुआ सत्य है, संगीत में ढली हुई शिक्षा”। “इफिसियों की पत्री अब तक लिखे गए सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों में से एक है।”

यह पत्री किसी और पत्री की तरह नहीं, **मसीही विश्वास का** सार, उद्गम और क्षितिज, उसकी परिपूर्णता और उसका प्रभाव बताती है। यह विश्वास परमेश्वर के उस पुत्र में स्थिर है, जो मरा, जी उठा और सिंहासन पर बैठाया गया। केन्द्र में हमारे प्रति परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण उद्धार-कार्य है। बहुतों में से वह एक एकता बनाता है। वह कलीसिया को रचता है। वह पृथ्वी पर उसका घर बनती है, जहाँ वह वास करता है। खोए हुए मनुष्य नए मनुष्य बन जाते हैं। पत्री के दूसरे आधे भाग का विषय नए मनुष्य का जीवन और उसकी दिनचर्या है। जीवन के हर संभव संबंध में।

पत्री के लिखे जाने का समय और उसके प्राप्तकर्ता

यहाँ बताने को बहुत कुछ है। पर उसके लिए और भी बहुत-सी अच्छी पुस्तकें हैं। यह पत्री पौलुस ने 62 ईसवी में लिखी। बंदीगृह से। एशिया माइनर की कलीसियाओं के नाम, रोमी आसिया प्रांत में, जिसकी राजधानी इफिसुस थी। एशिया माइनर के तीन सबसे बड़े महानगरों में से एक, 2,00,000 से अधिक निवासियों वाला। वहाँ बड़ी चहल-पहल थी! अपनी भौगोलिक स्थिति और व्यापार-मार्गों के कारण एक आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक केन्द्र। अनेक जातियों का संगम। और इसलिए तरह-तरह के धर्मों और पंथों का भी। हर घर की अपनी एक छोटी-सी गृह-मूर्ति थी, जिसे प्रतिदिन बलि चढ़ाई जाती थी। भविष्य बताने वाले, जादूगर-पुरोहित और शकुन बाँचने वाले एक प्रतिष्ठित व्यवसाय थे। सम्राट-पूजा का भी अपना ऐसा स्थान था, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता था। पर एक देवता, ठीक-ठीक कहें तो एक देवी, सब पर छाई हुई थी: अरतिमिस, शिकार और कौमार्य की देवी। वह ज़ियुस (Zeus) की बेटी और अपोलो (Apollon) की जुड़वाँ बहन थी। रोमी उसे डायना (Diana) कहते थे। वह स्त्रियों और लड़कियों की, विशेषकर प्रसव के समय, रक्षा करती थी। बदले में वह निष्ठा चाहती थी, जिसे इफिसुस में प्राचीन काल के सबसे बड़े मंदिरों में से एक में सिद्ध किया जा सकता था। पौलुस ने स्वयं अपने शरीर पर अनुभव किया कि इफिसुस में यह देवी कितनी बड़ी भूमिका निभाती थी। पौलुस ने नगर और आसपास के क्षेत्र में एक बड़ी जागृति देखी, हाँ, वह स्वयं उसका कारण बना। जिसके लिए उसे बहुत दुःख भी उठाना पड़ा। प्रेरितों के काम का 19वाँ अध्याय पढ़िए।

इफिसुस के ज़ेनोफ़ोन (Xenophon) ने प्राचीन काल के उन थोड़े-से प्रेम-उपन्यासों में से एक लिखा, जो आज तक बचे हैं: **Ephesiaka (इफिसुस की कहानियाँ)**। संभवतः यह पहली सदी में लिखा गया। इस छोटे उपन्यास के आरंभ और अंत में अरतिमिस-पूजा का जीवंत चित्र मिलता है, जिसे वैसे केवल स्त्रियाँ ही करती थीं और जिस पर उन्हीं का प्रभुत्व था: “उन्हीं दिनों वहाँ अरतिमिस का वह पर्व मनाया जा रहा था, जो वहाँ की रीति थी। नगर से पवित्र-स्थल तक सात स्तादिया (1.3 किमी) की दूरी है। देश की सब कन्याओं को अपने सबसे अच्छे आभूषण पहनकर एक गंभीर जुलूस में वहाँ जाना होता था […]। दर्शकों की भीड़ बहुत बड़ी थी, स्थानीय भी और परदेशी भी, क्योंकि रीति यह थी कि इसी पर्व पर कन्याओं के लिए वर चुना जाए। जुलूस व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ा, सबसे आगे पूजा के पात्र, मशालें, टोकरियाँ, धूप; उसके बाद घोड़े और कुत्ते, और शिकार तथा युद्ध के उपकरण भी, पर अधिकतर शान्ति के औज़ार। […] जब जुलूस निकल गया, तो सारी भीड़ बलि चढ़ाने के लिए मंदिर में उमड़ पड़ी।”

उपन्यास के अंत में, जब मुख्य पात्र वर्षों बाद इफिसुस लौटते हैं, वह लिखता है: “जैसे ही वे किनारे पर उतरे, वे जैसे थे वैसे ही तुरंत अरतिमिस के मंदिर में गए, बहुत-सी प्रार्थनाएँ कीं, बलि चढ़ाई, भेंटें अर्पित कीं और देवी के लिए एक शिलालेख वाली पट्टिका भी लगवाई।”

अरतिमिस मानो इफिसुस की रक्षक-देवी थी, जिसकी छाप समाज के हर वर्ग पर थी। नगर की इस पूरी तस्वीर के साथ यह पत्री हमारे लिए और स्पष्ट हो जाती है। लोग अदृश्य दैवी शक्तियों और सत्ताओं के प्रभाव से डरते थे। पर पौलुस मसीह का प्रचार करता है, जो इन सब शक्तियों के ऊपर ऊँचा किया गया है और जिसने उन्हें पराजित किया है।

21वीं सदी में प्रासंगिकता?

जो सत्य परमेश्वर ने पौलुस पर प्रकट किए, और जिन्हें पौलुस ने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से लिखा, वे कालातीत हैं। वे सदा बने रहते हैं। बात परमेश्वर और उसके मसीह की है। सब कुछ उसी के चारों ओर घूमता है, जिसका न आदि है न अंत।

हमारे समय की मूर्तिपूजा मूर्तियों, शकुन-वाणियों और रक्तमय बलियों के बिना चलती है। पर मूर्तियों की सेवा और बलि चढ़ाना तो बना हुआ है। कुछ भिन्न रूप में, पर भीतर से वही। सत्ता, धन और यौन-सुख पर टिकी दृष्टि बनी हुई है। इसके साथ डिजिटल संसार भी जुड़ गया है, जो ध्यान भटकाने और मन बहलाने के अंतहीन साधन देता है। आधुनिक मूर्तिपूजा न तो देवताओं को शांत करना चाहती है और न उन्हें पुकारना, बल्कि स्वयं मनुष्य को शांत करना चाहती है, ताकि उसकी उपभोग की लत को पूरी तरह तृप्त किया जाए।

स्वयं देख लीजिए! इफिसियों की पत्री संसार की इस दशा का निर्ममता से विश्लेषण करती है। पौलुस आज भी इसे सार में किसी और तरह नहीं लिखता। और यह पत्री बाहर निकलने का मार्ग दिखाती है। वह वैकल्पिक जीवन-शैली भी, जो सचमुच स्वर्ग से आती है।

पौलुस कोई नया धर्म नहीं लाया। वह मसीह को लाया, और उसके साथ एक नए मनुष्य को। और जीवन पर राज करने वाली शक्तियों से स्वतंत्रता, एक नए जीवन की ओर।

पत्री की विषय-वस्तु और रूपरेखा

भाग 1: अध्याय 1–3 शिक्षात्मक (सैद्धान्तिक) भाग

खंड	विषय-वस्तु
मसीह में उपहार में मिली उद्धार की स्थिति – उद्धार का कथन (इंडिकेटिव)	
अध्याय 1	
पद 1–14	परमेश्वर की स्तुति और आराधना: परमेश्वर अपने लिए क्या योजना बनाता और क्या करता है, और उसने हमें क्या दिया है; विश्व के लिए परमेश्वर का उद्देश्य: मसीह सब बातों के ऊपर सिर, और हम, कलीसिया, उसकी देह।
पद 15–23	हमें क्या पहचानना है: सबसे पहले स्वयं परमेश्वर को, आशा को, हम में परमेश्वर की मीरास को, और हमारे लिए उसके बड़े सामर्थ्य को, जैसा वह मसीह को जिलाए जाने में प्रकट हुआ।
अध्याय 2	
पद 1–10	पहले और अब – परमेश्वर का उद्धार: आत्मिक मृत्यु से स्वर्गीय स्थानों में मसीह में नई उद्धार-स्थिति तक।
पद 11–22	यहूदियों और अन्यजातियों के बीच अब कोई अलगाव नहीं: दोनों एक नया मनुष्य और मंदिर बनते हैं।
अध्याय 3	
पद 1–13	जातियों के प्रेरित की विशेष सेवा: नए नियम की विश्वव्यापी मंडली/कलीसिया, परमेश्वर की “नई” प्रजा, परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य के रूप में।
पद 14–21	हम किसके लिए प्रार्थना करते हैं: आत्मा के सामर्थ्य के लिए मध्यस्थता और स्तुति, यीशु के प्रेम की पहचान।
भाग 2: अध्याय 4–6 व्यावहारिक भाग – योग्य जीवन	
नए मनुष्य की दिनचर्या – उद्धार की आज्ञा (इम्परेटिव)	
अध्याय 4	
पद 1–16	एकता के लिए चितावनी: देह के वरदान और अंग, और देह की बढ़ती।
पद 17–32	नया मनुष्य: बिल्कुल भिन्न जीवन।
अध्याय 5	
पद 1–21	परमेश्वर की सन्तान के रूप में जीवन: संसार के विपरीत, परमेश्वर का अनुकरण करने वालों की बोली और चाल-चलन।
पद 22–33	मसीह और कलीसिया: पति और पत्नी के विवाह के लिए आदर्श।
अध्याय 6	
पद 1–9	माता-पिता और बच्चे – दास और स्वामी।
पद 10–24	परमेश्वर के हथियार: आत्मिक युद्ध।

अभिवादन 1:1-2

तुम्हें पौलुस लिख रहा है, कोई और नहीं। मैं यह प्रेरित होकर करता हूँ, यीशु मसीह के सीधे नियुक्त किए गए सेवक के रूप में, जो महिमान्वित परमेश्वर-पुत्र और मनुष्य-पुत्र है। उसकी इच्छा से मैं उसका भेजा हुआ दूत हूँ। मैं तुम्हें लिखता हूँ, हे राजधानी इफिसुस के पवित्र और प्रिय लोगो, और सारे रोमी आसिया प्रांत के भी। मैं तुम्हें अपने हृदय से लिखता हूँ। तुम्हें, जो यीशु के सब अनुयायियों की तरह परमेश्वर को समर्पित पवित्र लोग हो। मन से विश्वास करने वाले। तुम सब **मसीह में** जड़ पकड़े हुए और स्थिर हो। उसके साथ एक किए हुए। सदा के लिए उससे जुड़े हुए। मेरी बड़ी इच्छा है कि परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता, और उसका पुत्र, हमारा प्रभु यीशु मसीह, अपने कभी न सूखने वाले स्वर्गीय सोते से हमारे दैनिक जीवन के लिए हमें और भी अधिक अनुग्रह और शान्ति दे। प्रतिदिन। जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ।

स्वर्ग में, मसीह में, भरपूर दान पाए हुए 1:3

हम मिलकर, और जितनी बार हो सके, अपने परमेश्वर की स्तुति करते हैं। हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता की। चकित और कृतज्ञ हृदय से हम देखते हैं कि उसने आज ही हमें हर संभव आत्मिक आशीष दे दी है। अनुग्रह पाए हुए मनुष्यों के रूप में जो कुछ हम पा सकते हैं, भोग सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं, वह सब उसने हमें दिया। एक ऐसी आशीष, जो पवित्र आत्मा के द्वारा हम तक पहुँचती है और केवल उसी के द्वारा अनुभव की जा सकती है। हमें सब कुछ **स्वर्गीय लोक** में दिया गया। वहाँ, जहाँ मसीह है। अभी से, रोज़मर्रा के जीवन में, यह आशीष हमारे पास है। मसीह स्वर्गीय महिमा में अपने घर में है। और केवल उसी में हमें यह आशीष दी गई। वहाँ, स्वर्गीय लोक में। इस पर मैं आगे फिर बात करूँगा। **अभी से** स्वर्गीय आशीषों का यह धन हमारे पास है। और हम उसी में जीते हैं। फिर शीघ्र ही पूरी तरह, दिखाई देने वाली महिमा में। इन सब बातों के बारे में अब मैं तुम्हें और विस्तार से बताना चाहता हूँ।

आशीष का विवरण: पुत्र होने के लिए चुने गए 1:4-5

आशीषों का यह महान, अथाह धन विश्व के आरंभ से पहले ही हमसे प्रतिज्ञा किया गया था। जब हम में से कोई था ही नहीं। सब कुछ केवल उसी से – हम से नहीं – आरंभ हुआ। क्योंकि उसने हमें सब समयों से पहले ही चुन लिया था। हमें, जो सुसमाचार पर विश्वास करते हैं। ताकि हम पवित्र और निर्दोष होकर उसके प्रेम की सहभागिता में पहुँचाए जाएँ। ताकि उसके कृपालु मुख के सामने उसके साथ जीवन बिताएँ। प्रिय जनों के रूप में, और उसके प्रेम से प्रेरित होकर, हम पवित्र और निर्दोष जीवन जीना चाहते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमें इसके लिए ठहराया कि हम परमेश्वर की राजसी बेटियों और बेटों के पद पर बैठाए जाएँ। यह परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा किया। हमें उसके लिए उसके पुत्र के समान बनना था। जितना मूल्यवान पुत्र अपने पिता के लिए है, उतने ही मूल्यवान हमें उसके लिए बनना था। **अपने लिए**, अपने हृदय के लिए। क्योंकि इससे उसे आनंद मिलता है। क्योंकि यह उसे अच्छा लगता है। क्योंकि वह स्वयं को दे देने वाला प्रेम है। उसने हमें अपने स्वर्गीय परिवार की सहभागिता में ग्रहण कर लिया है।

परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ होने के रूप में हमारा यह अनकमाया स्वीकार परमेश्वर के अनुग्रह को सबसे उजले प्रकाश में चमका देता है। हम उसके महिमामय अनुग्रह की प्रशंसा के लिए ठहराए गए हैं। क्योंकि केवल अनुग्रह से ही हम यह बने हैं। उसने अपने प्रिय पुत्र में हमें इसके योग्य बनाया। वह हमें वही प्रेम देता है जो अपने पुत्र को देता है।

क्षमादान, छुटकारा, पापों की क्षमा 1:6-8

पर हम अयोग्य थे। पहले हमारे साथ कुछ होना ज़रूरी था। हम अपने बल पर – परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण हस्तक्षेप के बिना – कभी भी उसके प्रेम की सहभागिता में नहीं आ सकते थे। हमें छुटकारे की ज़रूरत थी! हम अपने पापों में बंदी और दोषी थे। छुटकारा यीशु के लहू के द्वारा आया। उसके प्रिय पुत्र की मृत्यु के द्वारा। उसका बलिदान हमारे पापों को सदा के लिए दूर कर देता है। जैसे उस समय मिस्र में हुआ था। फसह के मेम्ने का लहू इस्राएल के लिए छुटकारा लाया। अब उसने हमारे सब पाप और हमारी सारी अवज्ञा क्षमा कर दी है। क्योंकि उसके अनुग्रह का धन इतना बड़ा है। यह अनुग्रह उसने उमड़ने दिया। हमें इसकी कितनी ज़रूरत थी। और बहुत अनुग्रह की आवश्यकता थी। इसके विषय में उसने हमें समझ दी, ताकि हम इस अनुग्रह की ऊँचे स्वर से प्रशंसा कर सकें। इस प्रकार हम छुड़ाने वाले अनुग्रह को बार-बार नए सिरे से और अधिक से अधिक पहचान सकते हैं। पर उसने हमें उससे कहीं अधिक बताया, जितना हमारे लिए पर्याप्त होता।

उसकी इच्छा का भेद 1:9-10

अपने बेटों और बेटियों के रूप में उसने हमें अपनी अनन्त योजना और अपने निर्णय के भेद में भी सहभागी कर लिया है। वह चाहता है कि हम जानें कि उसने इस संसार और सारे विश्व के लिए क्या ठाना है। यह कोई आपात-योजना नहीं थी, जो मनुष्यों के पाप करने और खो जाने के बाद बनी। नहीं, यह अनन्त उद्देश्य परमेश्वर के पास हमारी खोई हुई दशा और पाप से बहुत पहले से था, और उनके बावजूद। यह अनन्त उद्देश्य आज कोई ऐसा भेद नहीं रहा, जिसे केवल कुछ गिने-चुने विशेषाधिकार वाले जान सकें। नहीं, उसकी सब बेटियाँ और बेटे इस भेद को जानते हैं। उसके हृदय की गहराई में इस बात से बड़ा आनंद है कि वह इस संसार के लिए प्रेम और आशीष की एक महिमामय योजना पूरी करे। वह समय आ रहा है, जब वे सब दूसरे समय, जिन्हें मनुष्यों ने तय किया और जिन पर उनकी छाप रही, बीत चुके होंगे। तब सब कुछ परमेश्वर के मसीह से भरा होगा और उसी की छाप लिए होगा। उसी से, जो सिर है, आशीष पृथ्वी की छोर तक निकलेगी। अगुवाई उसी के हाथ में होगी। जो कुछ अराजकता में बिखरा था, सब अपने में एक करेगा। वह हर चीज़ को फिर से उसके सही स्थान पर ले आएगा। जो एक साथ का है, उसे जोड़ देगा। इसका अर्थ है सारे ब्रह्मांड का उद्धार। आकाश और पृथ्वी को वह अपनी दिखाई देने वाली उपस्थिति से एक कर देगा। एक नया और बेहतर अदन, जो सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा, वह सब भुला देगा जो कभी था।

मसीह के अनन्त राज्य में हमारी मीरास 1:11-12

मसीह में, परमेश्वर के राजसी बेटों और बेटियों के रूप में, हम परमेश्वर के वारिस भी ठहराए गए हैं। जैसे कभी इस्राएल के 12 गोत्रों को चिट्ठी डालकर कनान देश में भाग मिला था, वैसे ही यह बड़ी, स्वर्गीय मीरास, एक अनन्त संपत्ति, मसीह में हमें बाँट दी गई है। हमें स्वयं परमेश्वर ने पहले से ठहराया है कि हम समयों की इस महिमामय परिपूर्णता को साथ मिलकर देखें। वह समय, जिसकी ओर सब कुछ बढ़ रहा है। हमें मसीह के साथ एक होना है। हमें यह कुलीन सम्मान मिला है कि हम उसके आदर के स्थान में भागी हों। तब, जब वह सब बातों के ऊपर सिर होगा। इस प्रकार परमेश्वर को हम से भी अधिक आनंद और प्रसन्नता मिलती है। यह अभी से उसकी महिमा और अनुग्रह की प्रशंसा करता है, पर उस दिन के आने पर और भी अधिक। सचमुच, उसने हमें अपने पास लाकर, मसीह में, स्वयं को उपहार दिया है।

यह संदेश हम तक कैसे पहुँचा 1:13-14

यह मीरास हमने, यहूदियों ने, पाई, जो पहले से मसीहा की बाट जोहते और उसकी आशा रखते थे। पर आज यह तुम्हारे लिए भी है, सारी पृथ्वी की जातियों के लिए। सच्चे और जीवित परमेश्वर के बारे में सत्य से तुम्हारी भेंट सुसमाचार में हुई। यही यीशु मसीह में उद्धार और छुटकारे का शुभ संदेश है। तुमने इस सुसमाचार को ग्रहण किया और उस पर विश्वास किया। परमेश्वर ने तुम्हारे विश्वास का उत्तर दिया। उसने तुम्हें अपनी निज संपत्ति के रूप में अपना लिया। और उसने अपनी संपत्ति पर पक्की मुहर लगा दी। यह मुहर पवित्र आत्मा है। उसकी प्रतिज्ञा हमसे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा और यीशु के द्वारा पहले ही की गई थी। पवित्र आत्मा इस बड़ी मीरास का परमेश्वर का सबसे मूल्यवान और सबसे पक्का बयाना है, जिसके बारे में मैंने अभी बात की। मानो परमेश्वर को इस प्रकार हमारे भविष्य की ज़मानत देने की ज़रूरत हो। वह कितना अनुग्रहकारी है। यह एक गिरवी की तरह है, जिससे आज हमें यह निश्चय मिलता है कि हम आने वाले संसार में मसीह के पास होंगे। यह निश्चय कि एक दिन हम परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ होने के नाते अनन्त जीवन में अपनी उचित मीरास पाएँगे। जब परमेश्वर की असीम भलाई से भरी उद्धार-योजना तब पूरी होगी, तो वह सबसे पहले और सबसे बढ़कर उसके आदर, उसकी कीर्ति और उसके अपने आनंद के लिए होगी। यह उसी से, उसी के द्वारा और उसी के लिए हुआ है।

पौलुस की मध्यस्थता की प्रार्थना 1:15-16

मैंने तुम्हारे उस जीवित विश्वास के बारे में सुना है, जिसमें तुम जीते हो। और उस प्रेम के बारे में भी, जो तुम सब पवित्र लोगों से, परमेश्वर की सब बेटियों और बेटों से, बिना भेदभाव के रखते हो। इससे मुझे बहुत आनंद है, और यही मेरी इच्छा उन सब सहभागिताओं के लिए भी है, जो मेरे प्रचार से बनी हैं। मैं अपनी प्रार्थनाओं में प्रतिदिन तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ, और सब दूसरों के लिए भी।

परमेश्वर को पहचानने के लिए प्रार्थना 1:17

विशेष रूप से मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम परमेश्वर को पहचानो। कि वह आत्मा के द्वारा तुम्हें यह वरदान दे कि तुम **स्वयं उसे** पहचानो। और अधिक से अधिक समझो। हमारे परमेश्वर को पहचानो! वह कौन है और तुम्हारे लिए व्यक्तिगत रूप से क्या है। क्योंकि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर है, महिमा का पिता। उसी से वह महिमामय योजना आती है, जिसकी मैं बात कर रहा हूँ। वही हर उस भली और महिमामय बात का स्रोत है, जो बिना योग्यता के हमें मिली है। इसी परमेश्वर को हमें सबसे पहले और सबसे बढ़कर पहचानना है। वह उन सब देवताओं से बिल्कुल भिन्न है, जिन्हें तुम जानते थे। उसे उसके पूरे स्वभाव में, उसके धन और उसकी महिमा में पहचानो। उसे सबसे बढ़कर यीशु में पहचानो। वही परमेश्वर का प्रतिरूप है। आत्मा हम पर परमेश्वर को प्रकट करेगा, हमें उसकी महिमा दिखाएगा, और हमारे हृदयों में सनातन परमेश्वर को बड़ा करेगा। आत्मा के बिना हम परमेश्वर को नहीं पहचानेंगे। जब आत्मा प्रकट करता है, तो वह हमारे आनंद के लिए और परमेश्वर की आराधना के लिए होता है।

आशा को पहचानना 1:18

इस प्रकार तुम्हें प्रकाश मिलता है और तुम हृदय की आँखों से, भीतरी मनुष्य की दृष्टि से, मसीह में परमेश्वर की महानता को देखते हो। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा और विश्वास में। तब हम साफ़ देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें किसलिए बुलाया है। हमारा लक्ष्य कितना महिमामय है। हमारी आशा कितनी विशाल। परमेश्वर के नए संसार में हम मसीह से, जो सिर है, जुड़े रहेंगे। केवल हम ही परमेश्वर के वारिस नहीं हैं, बल्कि यह मीरास स्वयं परमेश्वर की भी है। यह उसकी बिल्कुल निजी संपत्ति है, मानो वह भी कोई ऐसा हो जिसे मीरास मिलती है। और जो उसकी बाट आनंद से जोहता है। हम, पवित्र लोग, उसकी बेटियाँ और बेटे, उसकी मीरास हैं। यह तो मानो एक साझी मीरास है। परमेश्वर की महिमा और धन को देखते हुए, जो इस मीरास को पूरा करता है, यह साँस रोक देने वाली बड़ी है।

परमेश्वर का सामर्थ्य हम में और मसीह में प्रकट हुआ 1:19-20

मैं यह प्रार्थना भी करता हूँ कि तुम परमेश्वर के उस सामर्थ्य को पहचानो, जो तुम में काम कर चुका है और तुम्हारे लिए उपस्थित है। परमेश्वर का वह सामर्थ्य और बल, जिससे उसने विश्व को शून्य से अस्तित्व में बुलाया, हम में पूरी शक्ति से प्रकट होगा, जब हम अपनी मीरास पाएँगे और सदा उसमें जीएँगे। परमेश्वर का यह दैवी शक्ति-प्रयास, जिसे वह हमारे लिए लगाता है, एक बार पहले ही स्पष्ट दिखाई दे चुका है। वह अपनी पूरी शक्ति के साथ तब काम में आया, जब परमेश्वर ने अपने मसीह को क्रूस की लज्जाजनक मृत्यु में से खींच निकाला और उसे जिलाया। और उसे सब के ऊपर, अपने दाहिने, अपने सिंहासन पर, स्वर्गीय लोक में बैठाया। जी उठे और महिमान्वित मनुष्य के रूप में, आदर के इस सबसे ऊँचे स्थान पर, वह अदृश्य स्वर्गीय लोक की सब आत्मिक शक्तियों और अधिकारों पर विजयी है। वे इस स्थान पर अपना दावा करती हैं, पर यह केवल एक का अधिकार है: मसीहा का। यह अब सदा के लिए तय हो चुका है और सदा ऐसा ही रहेगा। बुरी, परमेश्वर-विरोधी शक्तियाँ पराजित हो चुकी हैं। वे उसके सामने काँपती हैं। मसीह बड़ा है और सब कुछ उसके अधीन है। इस प्रकार वह सब पर सिर, शासक और प्रभुता करने वाला है। अभी से, और जैसा मैंने पहले लिखा, एक दिन सब के लिए दिखाई देने वाला।

कलीसिया और मसीह – सिर और देह पूरी तरह एक 1:21-23

यह कितनी बड़ी और धन्य बात है, विश्वास करने का साहस भी कठिनाई से होता है, कि परमेश्वर ने इस महान मसीह को कलीसिया के लिए सिर के रूप में दिया है। विश्वासियों की सहभागिता, विश्वव्यापी कलीसिया, उसका शरीर है। सिर के रूप में मसीह पालने वाला और रक्षा करने वाला है। दोनों मिलकर एक आत्मिक, एक वास्तविक, पूर्ण जीवित देह हैं। संसार में दिखाई देने वाली। इससे भी बढ़कर: अपनी कलीसिया के साथ इस मेल में स्वयं मसीह भी पूर्ण हुआ है और परिपूर्णता तक पहुँचा है। मसीह, जो सिर है, यीशु के सब अनुयायियों से बनी अपनी कलीसिया के साथ जुड़कर, इस एकता में सब कुछ, विश्व के हर कोने तक, परमेश्वर की महिमा से भर देगा।

परमेश्वर ने हमें किस दशा में पाया 2:1-3

परमेश्वर के सामर्थ्य का यह प्रदर्शन केवल तुम्हारी भविष्य की मीरास में ही दिखाई नहीं देता। उसकी ज़रूरत तो तुम में से हर एक के साथ परमेश्वर की कहानी के आरंभ में ही थी। क्योंकि परमेश्वर के साथ अपने संबंध में तुम मानो **मरे हुए** थे। उससे मुँह मोड़कर तुम अपना ही जीवन जीते थे। बहुत-से पापों में उसकी आज्ञा न मानते हुए। तुम सच्चे और जीवित परमेश्वर से अलग थे, हाँ, मानो कटे हुए। परमेश्वर के बिना तुम **अन्धकार के अदृश्य शासक** के हवाले थे। यह तुम नहीं जानते थे। तुम सोचते थे कि तुम स्वतंत्र हो। यह शक्तिशाली प्रधान और उसके दूत मनुष्यों के संसार तक को प्रभावित करते और उस पर हावी रहते हैं। संसार के इतिहास के हर युग पर वह अपना प्रभाव डालता है। वह मनुष्यों को अपना उपनिवेश बना लेता है, ताकि वे सच्चे परमेश्वर को भूल जाएँ और उसकी आज्ञा न मानें। हम सब आज्ञा न मानने के पुत्र थे। हमें आज्ञा न मानना और पाप प्रिय थे। परमेश्वर से दूर और शैतान के हाथों चलाए जाने वाले इस समाज में हम सब शामिल थे। फिर भी अपने कामों के लिए हम स्वयं उत्तरदायी हैं। जहाँ भी हमें अवसर मिला, हमने पापमय अभिलाषाओं और वासनाओं को मन भरकर जिया। हमारे जीवन में सब कुछ इसी के चारों ओर घूमता था कि हम अपने आप को कैसे पूरा करें। जो कुछ मिल सकता था, हमने सब बटोर लिया। हम सोचते थे कि हम स्वतंत्र हैं, पर थे अपने पापों में बंदी। हम संसार की आत्मा में साँस लेते थे, पर जीते-जी मरे हुए थे। यही हमारा स्वभाव था, जिसके साथ हम जन्मे थे। परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा जीवन केवल उसके क्रोध के योग्य था।

परमेश्वर के प्रेम को कोई रोक नहीं सकता, वह असंभव को संभव कर देता है 2:4-7

पर इस परमेश्वर ने हमारे साथ वैसा बिल्कुल नहीं किया, जिसके हम योग्य थे! वह हमारे प्रति अगम्य दया से भरा है, क्योंकि वह – शैतान और उसके सेवकों और संसार के सब देवताओं से बिल्कुल भिन्न – प्रेम का परमेश्वर है! उसने हमारी निराशाजनक दशा देखी, जिससे हम अपने आप को कभी छुड़ा नहीं सकते थे। और छुड़ाना चाहते भी नहीं थे। **परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया – उसने सचमुच हमसे प्रेम किया।** हमें इस खोई हुई दशा से छुड़ाया। उसने अपने प्रेम से हमें पाप के इस बंदीगृह से बाहर निकाल लिया। हम तो अपने अपराधों में आत्मिक रूप से मरे हुए थे। हम उससे अलग और बहुत दूर थे। परमेश्वर के जीवन के सोते से पूरी तरह कटे हुए। पर परमेश्वर ने हमें मृत्यु के इस बंदीगृह से छुड़ाया। उसने हमें खींच निकाला, जब उसने हमें मसीहा के साथ, उसकी स्वेच्छा से सही गई मृत्यु में से, जिलाया और जीवित किया। परमेश्वर का सामर्थ्य मसीह में इतनी प्रचंडता से काम में आया कि उसने हमें भी उसके साथ जीवन में उछाल दिया। इस प्रकार हम उसके साथ एक नए और वास्तविक जीवित संबंध में आ गए। यही निराशाजनक खोई हुई दशा से सच्चा उद्धार और छुटकारा है! हमारा भाग्य तय हो चुका था, पर परमेश्वर की असीम भलाई वह अंतर लाती है जो छुड़ाता है। ऐसा होता है अनकमाया अनुग्रह! ऐसा है हमारा परमेश्वर! पर उद्धार उससे कहीं बड़ा है और कहीं दूर तक पहुँचता है, जितनी हम कभी कल्पना कर सकते थे! परमेश्वर ने हमें मसीहा से इतनी घनिष्ठता से जोड़ा कि हम केवल उसके साथ अपनी आत्मिक मृत्यु से जिलाए ही नहीं गए। हम उसके साथ **स्वर्गीय लोक** में ऊपर भी उठा लिए गए, जहाँ उसे परमेश्वर के दाहिने बैठने का अधिकार मिला। वहाँ, मसीह में, हम भी साथ बैठ सकते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में विश्राम पा सकते हैं। परमेश्वर ने मसीह में हमें अपने पास, अपने हृदय से लगा लिया है। यह अभी से वास्तविकता है। हमारी दिनचर्या में सच। इसी ज्ञान में, परमेश्वर की राजसी बेटियों और बेटों के अपने पद में, हम अब परमेश्वर के लिए जीते हैं। इस प्रकार हम स्वर्गीय विजेता के क्षेत्र में पहुँचा दिए गए हैं। एक दिन यह पद केवल विश्वास में ही नहीं जिया जाएगा। एक दिन यह पुनरुत्थान में दिखाई देगा। जब हमें महिमा की एक नई देह मिलेगी। इसी स्वर्गीय स्थान से हम परमेश्वर के नए संसार में, अपने प्रभु यीशु के अनन्त राज्य में प्रवेश करेंगे। और वहाँ, मसीह में, अनुग्रह के और भी वरदान पाएँगे। परमेश्वर हमारे प्रति अनुग्रह और भलाई में कितना धनी है! **आज के लिए भी और कल के लिए भी।** आने वाले समय और अनन्तता में भी हमारे प्रति उसकी भलाई का कोई अंत न होगा।

अनकमाया अनुग्रह हमें परमेश्वर की उत्कृष्ट रचना बनाता है 2:8-10

परमेश्वर का यह सारा बचाव-अभियान अनकमाया अनुग्रह था! हमने इसमें कुछ भी योगदान नहीं दिया। हम केवल परमेश्वर और मसीह पर विश्वास और भरोसा कर सकते थे, जैसा हमने सुसमाचार में सुना था। **परमेश्वर का महान उद्धार उसकी विश्वासयोग्यता, उसका दान और उसका उपहार है!** इस पर मैं जितना ज़ोर दूँ, कम है! न तो हमने तब इसे चाहा था, न ही हमने ऐसा कुछ किया था जिससे परमेश्वर कुछ काम ले सकता। सारी कीर्ति और सारा आदर केवल परमेश्वर का है! अब हम उसकी उत्कृष्ट रचना हैं, मसीह में उसकी नई सृष्टि! आरंभ में मनुष्य इसलिए रचे गए कि फूलें-फलें और बढ़ें। वैसे ही अब हम भी परमेश्वर के नए मनुष्यों के रूप में भले कामों को बढ़ा सकते हैं। इसी में हमें फलवन्त होना है। जो भले काम हम करते हैं, उन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार कर रखा है। वे हमारे पाँवों के सामने पड़े हैं और किए जाने की बाट जोह रहे हैं। परमेश्वर ने हमारे साथ जो भलाई की, उसे अब हम आगे दे सकते हैं। ताकि लोग आशीष पाएँ और परमेश्वर को आदर मिले। केवल उसी को!

निकट वाले और दूर वाले – दोनों का मेल-मिलाप हुआ और दोनों परमेश्वर के पास लाए गए 2:11-16

यह कभी न भूलना कि तुम, जो अन्यजातियों में से हो, कहाँ से आए हो। तुम परमेश्वर से कितनी दूर थे। इस्राएल की दृष्टि में तुम "खतनारहित" कहलाते थे। वह परमेश्वर की वाचा की प्रजा थी, जिसे खतने की वाचा-मुहर का दान मिला था। तुम मसीहा की आशा के बिना जीते थे। न तुम्हें उसकी आशा थी, न उस पर कोई अधिकार। इस्राएल की नागरिकता तक तुम्हारी कोई पहुँच नहीं थी। वे वाचाएँ, जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपने को अपनी प्रजा इस्राएल से बाँधा, और वे महान प्रतिज्ञाएँ, जो उसने अपनी निज प्रजा को दीं, तुम्हारे लिए नहीं थीं। **कुल मिलाकर: तुम आशाहीन होकर खोए हुए थे।** आशा की एक चिनगारी के बिना, हाँ, इस्राएल के सच्चे परमेश्वर के बिना, जातियों के संसार में भटके हुए। तुमने स्वयं इसे ऐसा नहीं समझा, पर सच यही है। पर अब कुछ ऐसा हुआ है, जो हम यहूदियों के लिए अनपेक्षित और सब के लिए अनकमाया और चौंका देने वाला है। तुम, जातियाँ, परमेश्वर से दूरी में से मसीह के द्वारा सीधे परमेश्वर की निकट उपस्थिति में लाए गए हो। यह केवल मसीहा के लहू के द्वारा संभव हुआ। वही हमारा शालोम है! वही हमारे, इस्राएल, और जातियों के बीच की शान्ति है। उसने अलगाव को, हमारे बीच की दीवार को, ढा दिया। यह उसने मनुष्य बनकर किया, और उन नियमों को निष्प्रभावी करके, जिनसे यह अलगाव और दीवार बनी थी। वह इन दोनों को, इस्राएल और जातियों को, शान्ति में एक करना चाहता था। वह उन्हें अपने आप में एक बिल्कुल नया मनुष्य भी रचना चाहता था। **हम सब मिलकर अब यही एक नया मनुष्य बन गए हैं।** केवल अकेला व्यक्ति ही नहीं गिना जाता, बल्कि जो हम मिलकर हैं, वह भी। उसने, यीशु ने, दोनों को एक शरीर में जोड़ा और उनका आपस में मेल कराया। और दोनों का एक साथ परमेश्वर से मेल कराया। उसने शान्ति स्थापित की। और क्या तुम जानते हो कि उसने यह कैसे किया? किस समर्पण से और किस मूल्य पर? भयानक क्रूस के द्वारा! क्रूस पर अपने दुःखों और क्रूस पर अपनी मृत्यु से उसने इस बैर को मानो मार डाला और मिटा दिया। जो कुछ हमारे और परमेश्वर के बीच खड़ा था, उसे उसने क्रूस पर हटा दिया।

यह संदेश बाहर जाना ही चाहिए 2:17

क्रूस का संदेश लेकर वह, मसीहा, अपने भेजे हुओं के द्वारा और अपने आत्मा के द्वारा सारे संसार में चल रहा है। सब मनुष्य इसे सुनें। तुम्हें, जो बहुत दूर थे, अर्थात् जातियों को, और हम यहूदियों को भी, जो निकट थे, यह सर्वव्यापी शान्ति और मेल-मिलाप सुनाया जाता है। **परमेश्वर के साथ शान्ति और आपस में शान्ति!** यही सुसमाचार का संदेश है।

हमें निमंत्रण मिला है – हम साहस से सिंहासन के सामने आते हैं 2:18

सोचो, त्रिएक परमेश्वर, पिता, पुत्र और आत्मा, हमें, इस्राएल और जातियों को, निमंत्रण देता है कि हम मिलकर उसकी स्वर्गीय उपस्थिति में उसके पास आएँ। सनातन, सर्वशक्तिमान, पवित्र और प्रेम करने वाले परमेश्वर के सम्मुख जाएँ। हम यीशु के द्वारा, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और अगुवाई से उसके निकट आते हैं। वही हमें योग्य बनाता है और साहस देता है कि हम यह विश्वास में और आनंदपूर्ण भरोसे के साथ करें। बिना किसी भय के। जो कोई परमेश्वर के पार्थिव मंदिर में उसके निकट आता था, वह भय से भर जाता था। पर अब वह हमारा स्वर्गीय पिता है। वह अपने बेटों और बेटियों से प्रेम करता है! उसका हृदय हमारे लिए खुला है।

नई मातृभूमि और नया घर – एक नया भवन 2:19-22

पर सब कुछ हमारे लिए सबसे भली दिशा में भी मुड़ गया है। तुम, जातियाँ, अब परदेशी नहीं रहे, अब बेघर नहीं, अब बिना मातृभूमि के नहीं, अब दूसरे दर्जे के मनुष्य नहीं। हम परमेश्वर के संगी-निवासी और उसके घराने के सदस्य बन गए। हाँ, अब हम इस्राएल के विश्वासियों के साथ भी उसके स्वर्गीय घर में, उसके परिवार के रूप में, रहते हैं। सनातन परमेश्वर ने आख़िरकार पृथ्वी पर एक स्थायी घर पा लिया है, जिसकी खोज वह आरंभ से कर रहा था।

यह घर इस नींव पर बना है: यीशु के प्रेरितों और उसके भविष्यद्वक्ताओं पर। वे उद्धार के प्रचार के आरंभ में खड़े थे, वे पुनरुत्थान के गवाह और प्रभु यीशु के भेजे हुए थे। वे सुसमाचार और हमारे प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा लाए। इस घर में यीशु मसीह कोने का पत्थर है, जिसके अनुसार सब कुछ सीधा बैठाया जाता है। **जो चोटी के पत्थर के रूप में स्थिरता की गारंटी देता है।** उसी में सारा घर ठीक-ठीक सीधा बैठा है और मज़बूती से जुड़ा हुआ है। यद्यपि यह घर मसीह के द्वारा पहले से ही सिद्ध है, फिर भी यह बढ़ता जाता है। एक जीवित देह की तरह। यह प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनता जाता है। उसमें कोई और नहीं, स्वयं त्रिएक परमेश्वर वास करता है। तुम, जातियाँ, भी अब इसमें शामिल हो। हम इस्राएलियों के साथ इसका आरंभ उस समय यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। और उसके कुछ ही समय बाद तुम भी इस दैवी निर्माण के जीवित पत्थर बन गए। पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हम सब को मिलाकर परमेश्वर का यह निवास-स्थान बनाता है। मिलकर हम परमेश्वर का वास-स्थान बन गए हैं। कभी वह पत्थरों का एक मंदिर था। एक ही स्थान पर। अब उसका मंदिर सारी पृथ्वी पर फैला है। हर जगह प्रतिदिन जीवित पत्थर उसके मंदिर में जोड़े जाते हैं। अलग करने वाली दीवार ढा दी गई है – अब मंदिर बन रहा है।

मसीह का भेद प्रकट हुआ और पौलुस ने उसका प्रचार किया 3:1-7

मैं, पौलुस, बंदीगृह से तुम्हें लिखता हूँ। पर मैं रोमियों का बंदी नहीं हूँ, भले ही ऐसा दिखता हो। मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का बंदी हूँ और रहूँगा। सब कुछ वही तय करता है। मेरे जीवन का हर दिन। तुम्हारे लिए, जातियों के लिए, मैं बंदीगृह में हूँ। अपने यहूदी देशवासियों के कारण, जिन्हें यह असहनीय लगता है कि तुम, जातियाँ, अब परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ बनते हो। पर मसीह ने मुझे यह काम सौंपा है कि तुम्हें, जो मूर्तिपूजा के अन्धकार में उलझे हुए थे, परमेश्वर के अनुग्रह का प्रचार करूँ। यह सब मैंने अपने मन से नहीं गढ़ा। यह मुझ पर अलौकिक रीति से प्रकट किया गया। परमेश्वर के अनुग्रह का यह भेद अब भेद नहीं रहा। मैंने अभी थोड़े शब्दों में इसका वर्णन तुम्हारे लिए किया है। यही मसीह का भेद है, जो सब मनुष्यों से छिपा था। हम से भी, उसकी पुरानी प्रजा इस्राएल से। पर अब परमेश्वर के आत्मा ने इसे यीशु मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर पूरी तरह प्रकट कर दिया है। अब वे इसे जानते हैं और मसीह और उसके अनुग्रह का खुलकर प्रचार करते हैं। इस प्रकार हम सब जान सकते हैं कि इस भेद में कभी क्या छिपा था: कि हम, जो जातियों में से हैं, परमेश्वर के संगी-वारिस हैं; कि हम, जो जातियों में से हैं, मसीह की देह में, उसकी कलीसिया में, सम्मिलित किए गए हैं; कि हम, जो जातियों में से हैं, अब उन प्रतिज्ञाओं में भी भागी हैं, जो बहुत पहले इस्राएल को मिली थीं। जो कुछ अब हमारे पास मिलकर है, वह हमारे पास केवल यीशु मसीह में है। उसी में और उसी के द्वारा परमेश्वर ने हमें छुड़ाया और दान दिया। **सुसमाचार ही मसीह के भेद के विषय में एकमात्र और भरोसेमंद संदेश है।** तुमने उसे विश्वास के साथ ग्रहण किया। मैं इस सुसमाचार का सेवक हूँ और इसके लिए अपना सब कुछ लगा देता हूँ। यह परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है, एक अनकमाया उपहार, कि मुझे सुसमाचार का सेवक होने के योग्य समझा गया। मैं यह उसके उस सामर्थ्य से हो पाता हूँ, जो मुझ में काम करता है। मैं यह भेजे जाने का दायित्व अपने अंतिम दिन तक विश्वासयोग्यता से पूरा करना चाहता हूँ।

भेद इसलिए प्रकट हुआ कि सारे संसार में उसका प्रचार हो 3:8-13

जब मैं अपने अतीत के बारे में सोचता हूँ, तो मैं सचमुच अपने आप को पवित्र लोगों में सबसे छोटा और सबसे अंतिम पाता हूँ। इस बड़े काम पर मैं कोई घमण्ड नहीं कर सकता। **मुझे तुम्हें, जातियों को, संसार की छोर तक मसीह के अथाह धन का प्रचार करना है।** मेरे प्रचार के द्वारा, जितने अधिक हो सकें, उतने सुनने वाले इस भेद के विषय में प्रकाश पाएँ। वे पहचानें कि परमेश्वर ने अपने समय पर इसे कैसे खोला। और अब सुसमाचार के द्वारा इसे सब के लिए सुलभ बनाता है। सब समयों से पहले यह उसके प्रेमी हृदय की लालसा थी। पर यह छिपा रहा, जब तक मसीह न आया। यह उस परमेश्वर से आता है, जिसने सब वस्तुएँ रचीं। इससे बिना संदेह स्पष्ट है कि हमारा काम किस परमेश्वर से है: किसी ऐसे देवता से नहीं, जिसे मनुष्यों ने गढ़ लिया हो। नहीं, उस सनातन से, जिसका कोई आरंभ नहीं, बल्कि जिसने स्वयं सब को आरंभ दिया। वही इस भेद का रचयिता है। यह सारी सृष्टि से संबंध रखता है। वह उसे अपनी महिमा से भर देगा। अंतिम वचन परमेश्वर का है। अदृश्य स्वर्गीय लोक के अधिकारों, शक्तियों और प्रधानों का नहीं। वे सारी सृष्टि को अपने अधिकार में लेना चाहते हैं। और मनुष्यों को अपने इशारों पर नचाकर नष्ट करना चाहते हैं। ये शत्रु, अदृश्य शक्तियाँ भी परमेश्वर की रची हुई हैं और कभी उसके स्वर्गीय परिवार का हिस्सा थीं। पर बहुत-सी उससे फिर गईं। अब यहूदियों और जातियों से बनी छुड़ाई हुई और स्वतंत्र की गई कलीसिया के द्वारा उन्हें परमेश्वर का गहरा, छुटकारा देने वाला ज्ञान दिखाया जाता है। इन शक्तियों को निरुपाय होकर मानना पड़ता है कि परमेश्वर के जिस अनन्त उद्देश्य को उसने मसीह में, प्रभुओं के प्रभु में, पूरा किया, उसे न तो वे पहचान सकीं, न रोक सकीं। उन्हें देखते रहना पड़ता है कि जो मनुष्य उन्हीं की तरह पापों में उलझे थे, अब परमेश्वर के परिवार में अपना स्थान ले सकते हैं। स्वर्ग पर उठाए गए और महिमान्वित मसीह में हमें यह आनंदपूर्ण भरोसा और पूरा अधिकार है कि हम विश्वास में इस महिमामय परमेश्वर के सामने जाएँ। उसके स्वर्गीय सिंहासन तक। वह हमसे बस घुटने टेकने भर की दूरी पर है, क्योंकि हम तो स्वर्गीय लोक में पहुँचा दिए गए हैं। हर स्थान पर हम इस सिंहासन के पास आ सकते हैं – वह बस एक कदम दूर है। यह भी शक्तियों को मानना पड़ता है। वे अब अपने सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में नहीं जा सकतीं।

बंदीगृह में और सताव में मेरी संकट-भरी दशा के कारण हियाव न छोड़ो। आख़िर यह सब केवल इसलिए हुआ है कि मैं तुम्हें मसीह के भेद और धन का प्रचार करता हूँ। और यह विशेषाधिकार भी कि परमेश्वर के निकट बेझिझक आओ। याद रखो कि मेरी सेवा के द्वारा तुम कितने धन्य हो, उसी सेवा के कारण मैं यहाँ ज़ंजीरों में हूँ।

आत्मिक सामर्थ्य, मसीह के भीतर वास और उसके प्रेम की पहचान के लिए मध्यस्थता 3:14-19

मुझ पर जो कुछ भी बीतता है, उसके बावजूद मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ता। पिता के सामने अपने घुटनों पर। सृष्टिकर्ता होकर वह सब को नाम देता है, स्वर्गीय घरानों को, स्वर्गदूतों को, और हम मनुष्यों को भी। वह – सृष्टिकर्ता के रूप में – सब के ऊपर है। इसलिए हमारी प्रार्थनाओं का पहला और एकमात्र पता वही है।

मैं उससे ठीक-ठीक यह माँगता हूँ कि तुम सब उसका **सामर्थ्य** पाओ। उतना आत्मिक सामर्थ्य, जितना वह महिमा में धनी है। उसका आत्मा यह दैवी सामर्थ्य निरंतर हमारे भीतरी मनुष्य में बहाता रहे। और हमारे प्राण में उसे बढ़ाता रहे।

इस प्रकार परमेश्वर के आत्मा के कार्य से **मसीह** तुम्हारे हृदयों में, तुम्हारे अंतरतम में, तुम्हारे विचारों में **स्थान पा सकता है**। बहुत-सी आवाज़ें और चीज़ें लगातार तुम्हारे हृदय का स्थान घेरना चाहती हैं। उसे सदा पहला स्थान दो।

इस प्रकार तुम उसके **प्रेम** में जड़ पकड़े हुए और दृढ़ता से स्थिर रहोगे। ऐसा प्रेम, जो धन्यवाद के साथ पाया गया और प्रतिदिन आगे भी दिया जाता है, जो तुम्हें सब पवित्र लोगों के साथ, परमेश्वर को समर्पित सब लोगों के साथ, जोड़कर एक कर देता है।

विशेषकर मिलकर, सहभागिता में, उन अनेक स्थानों पर जहाँ यीशु के चेले इकट्ठे होते हैं, हम परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को, उसके पूरे विस्तार को समझते हैं। परमेश्वर की इस अनन्त योजना को बार-बार अपनी आँखों के सामने रखो। वह **मसीह के प्रेम** से भरी है, जो असीम और अतुलनीय रूप से बड़ा है। उसी के प्रेम ने यह सब संभव किया। मसीह का यह प्रेम उससे बड़ा है, जितना हम कभी समझ पाएँगे। यह हमें बार-बार गहराई से छू सकता है, प्रभावित कर सकता है और आराधना में ले जा सकता है। इस विशाल उद्देश्य की खोज करो और उससे प्रेम करो। ऐसा न करना परमेश्वर की बेटियों और बेटों के लिए लज्जा की बात होगी। क्योंकि केवल इसी प्रकार हम मसीह से और स्वयं परमेश्वर से भरपूर और परिपूर्ण होते हैं। **यह अभी से पृथ्वी पर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।**

सर्वशक्तिमान को, जो हम में काम करता है, सारी महिमा – उसकी प्रजा की ओर से 3:20-21

कैसा परमेश्वर है! ऐसा, जो सब कुछ कर सकता है। और उससे भी कहीं अधिक, जितना हम सोच सकते, योजना बना सकते, आशा कर सकते या माँग सकते हैं। अपने उस सामर्थ्य के द्वारा, जो हम में काम करता है। आज और अनन्तकाल तक। उसी का सारा आदर और सारी महिमा हो। हम तो केवल स्तुति करते हुए मान सकते और आराधना कर सकते हैं कि हे परमेश्वर, तेरी महिमा कैसी है। तेरी कलीसिया के बीच, तेरे घर में, जहाँ तू आनंद से वास करता है, वहाँ सारा आदर और स्नेह, प्रेम और आराधना तेरी ही है, मसीह में: आज, कल और सदा-सर्वदा, युगानुयुग। आमीन।

यहाँ पत्री का पहला आधा भाग समाप्त होता है। उसमें बात यह थी कि परमेश्वर ने कैसे हमारा उद्धार किया और हमें असीम आशीष दी। दूसरे आधे भाग में बात यह है कि परमेश्वर हमारे पूरे जीवन को कैसे उलट-पलट देता है। परमेश्वर के हस्तक्षेप से हम नए मनुष्य बन गए हैं। और नए मनुष्य कैसे जीते हैं, यही दूसरे आधे भाग का विषय है। जीवन के बहुत-से क्षेत्रों की बात होती है और पहले और बाद को आमने-सामने रखा जाता है। बात यह है कि जो हम हैं, वैसा ही जीएँ। उद्धार में से और अनुग्रह में से परमेश्वर का जीवन जीएँ। अपने संगी मसीहियों, अपने संगी मनुष्यों, अपने जीवनसाथियों और बच्चों के साथ।

प्रेम भरी एकता जीना, उसकी देखभाल करना और उसे बनाए रखना 4:1-3

मैं, जो प्रभु यीशु में बंदी हूँ, तुम्हें उत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर की महिमामय बुलाहट तुम्हारे दैनिक जीवन में दिखाई दे। उसी ने तुम्हें वह बनाया है, जो तुम अब मसीह में हो। इसका वर्णन मैंने अभी अपनी पत्री में किया है। परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया। तुम्हारा जीवन परमेश्वर की इस महिमामय बुलाहट से पूरी तरह मेल खाए। और इसका अर्थ इसके सिवा कुछ नहीं कि वैसे जीओ, जैसे यीशु जिया। उसका अनुकरण करने वाले बनो। इसमें यह भी शामिल है कि तुम्हारे साथ रहने में एक-दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार हो, जिसमें **दीनता** और **नम्रता** और **धीरज** रचे-बसे हों। बड़ाई मत मारो और घमण्ड मत करो। किसी को चोट मत पहुँचाओ, न शब्दों से न कामों से। यदि ज़रूरी हो, तो दूसरे को सोच बदलने का समय दो। अपने आप को उसकी जगह रखकर देखो। परमेश्वर के प्रेम के द्वारा दूसरे को उसकी कमज़ोरियों और गलतियों समेत सह लो। **स्वयं परमेश्वर भी तो हम में से हर एक के साथ ऐसा ही करता है।**

बात सब पवित्र लोगों की **एकता** से कम किसी चीज़ की नहीं है। उसे परमेश्वर ने चाहा और उससे वह प्रेम करता है। उसका वर्णन मैंने पहले तुम्हारे लिए किया। उसे परमेश्वर के आत्मा ने रचा है। केवल वही इस एकता को संभव और अनुभव-योग्य बनाता है। पर वह नाज़ुक है और आसानी से घायल हो सकती है, इसलिए हमें उसे एक **बहुमूल्य ख़ज़ाने** की तरह संभालना और बचाना है। क्योंकि **आत्मा की एकता** परमेश्वर का ख़ज़ाना है। यही वह है, जिसकी लालसा परमेश्वर का हृदय करता है और जो उसके अपने स्वभाव और अनन्त उद्देश्य में स्थिर है। यह एकता उसने हमें दी है। यह परमेश्वर के सब बेटों और बेटियों की दिखाई देने वाली, जी जाने वाली और व्यावहारिक एकता है। **यह एकरूपता या सबको एक जैसा बनाना नहीं, कोई आयोजन नहीं, बल्कि आपस में जुड़े रहने का एक निर्णय है, यीशु में हर जाति और हर सामाजिक वर्ग और हर स्वभाव के बिल्कुल भिन्न लोगों का बिना शर्त एक साथ बने रहना।** इसलिए एक देह में एक होना हमारे पूरे ध्यान और परिश्रम के योग्य है। शान्ति के बंधन से हमें एक साथ बँधा रहना है, मानो एक-दूसरे से जकड़े हुए। केवल इसी प्रकार यह बहुमूल्य एकता व्यवहार में बनी रह सकती है। हमें इस शान्ति का पीछा करना है, ताकि वह हमसे कभी छूट न जाए।

एक महान एकता और उसके रूप 4:4-6

सब पवित्र लोगों की, सब चेलों की यह एकता एक सात-गुनी एकता पर टिकी है। वह हमसे बड़ी है, फिर भी हम उसका हिस्सा हैं। हम उसी में जड़ पकड़े हुए हैं। हमारे द्वारा वह दिखाई देती है: एक देह, नया मनुष्य, सारे संसार के सब बेटों और बेटियों से बना, परमेश्वर के आत्मा द्वारा रचा हुआ।

एक आत्मा, जो जोड़ता है – बहुत-सी आत्माएँ नहीं, जो फूट डालती हैं।

एक आशा, जो हमें परमेश्वर के महान, युगांतकारी लक्ष्य की ओर मोड़ती और एक करती है।

एक ही प्रभु यीशु मसीह सब के लिए, जो संसार के सब प्रभुओं और कैसरों से बड़ा है, जिसकी सेवा हम सब आनंद से करते हैं।

एक विश्वास हमें एक करता है, जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा हमें सुनाया और सौंपा गया।

एक बपतिस्मा हमारी पहचान का चिह्न है, पानी में, जिसके द्वारा हर चेला परमेश्वर और मनुष्यों और अदृश्य शक्तियों के सामने गवाही देता है कि मसीह मरा और जी उठा, और हम उसके साथ।

एक सच्चा और जीवित परमेश्वर और पिता, परमेश्वर के सब बेटों और बेटियों का, जो इस एकता में काम करता है, जो सब के ऊपर विराजमान है, सब के द्वारा काम करता है और सब में वास करता है।

मसीह अनुग्रह के वरदान बाँटता है, जो एकता की सेवा करते हैं 4:7-11

जैसे मुझे, पौलुस को, परमेश्वर का अनुग्रह दिया गया, वैसे ही हर उस व्यक्ति को, जो आत्मा की इस एकता में शामिल है, एक विशेष अनुग्रह दिया गया है। अनुग्रह के इस व्यक्तिगत वरदान से हर एक को इस एकता की सेवा करनी है। और उसे बनाए रखने में हाथ बँटाना है। सारी भिन्नताओं के बावजूद। यह वरदान हमारे महिमान्वित प्रभु यीशु ने हर चेले को दिया है, और वह भी हर एक को व्यक्तिगत रूप से, जैसा उसने अपनी दैवी बुद्धि से हर एक के लिए उपयुक्त बाँटा है। **जितना हर एक उठा सके और पूरा कर सके।**

ये वरदान, जो मसीह ने हम में से हर एक को बाँटे हैं, उसकी प्रचंड विजय का फल हैं। यह कभी न भूलना कि उसने सब कुछ दे दिया, ताकि हम यह अनुग्रह पा सकें! मुझे भजन संहिता 68 याद आता है, जो प्रभु के बारे में एक पराक्रमी योद्धा के रूप में बोलता है, जो एक आत्मिक युद्ध में बाशान के पर्वत, हेर्मोन, पर चढ़कर उसे जीत लेता है। वे बलवान शत्रु, बाशान के साँड़, अन्धकार की वे शक्तियाँ हैं, जिनके बारे में मैं अब तक कई बार बोल चुका हूँ। वे पराजित होते हैं और बंदी बनाकर नीचे ले जाए जाते हैं। वे उसकी लूट हैं। इसी प्रकार मसीह ने इन शक्तियों को, जिन्होंने तुम्हें भी बंदी बना रखा था, गुलगुता पर क्रूस के द्वारा पराजित किया। **मसीह विजयी होकर, जयजयकार के साथ, स्वर्गीय लोक में ऊपर चढ़ गया।** और वहाँ से वह अपने आत्मा में पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में नीचे उतर आया। मसीह का आत्मा भरपूर वरदानों के साथ उतरा, जिन्हें उसने बाँटा और अपनी देह को, अपनी कलीसिया को दिया। दोनों, उसका ऊपर चढ़ना और उसका नीचे उतरना, विजय-यात्राएँ हैं। वह पृथ्वी पर, हमारे पास, नीचे उतरा, ताकि राजसी उदारता से, विजयी योद्धा के रूप में, हमें वरदान बाँटे। मसीह, जो मरा और मृत्यु में से जी उठा, परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन तक ऊपर उठाया गया, ताकि सब कुछ अपनी महिमामय उपस्थिति से भर दे। विश्व का हर कोना, और वैसे ही हमारा दैनिक जीवन भी, मसीह से भरा हो, और भरा होगा।

अनुग्रह के वरदान कार्य में – सेवा, एकता, पहचान, बढ़ती, परिपक्वता, सत्य और प्रेम 4:11-16

क्या मसीह ने ऊपर उठा लिए जाने के बाद अपनी कलीसिया को उसके हाल पर छोड़ दिया? नहीं, क्योंकि उसने अपनी कलीसिया को वरदान के रूप में मनुष्य दिए हैं। यहाँ मैं पाँच का नाम लेता हूँ। उसने उन्हें **प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार-प्रचारक, चरवाहे और शिक्षक** होने के वरदान और योग्यता दी। उनकी सेवा और परिश्रम, अपने अलौकिक, आत्मिक वरदान के साथ, इसलिए है कि सब पवित्र लोग, सब चेले, अपनी विशेष सेवा के लिए तैयार और सक्षम हो जाएँ। इसी के लिए तो उन **सब** ने मसीह से अनुग्रह का वरदान पाया है। हर एक को एक वरदान मिला है, और उसके साथ एक दायित्व भी। वरदान और दायित्व को इस पाँच-गुनी सेवा के द्वारा पहचाना जाए, बढ़ाया जाए और उनसे काम लिया जाए।

इन पाँच वरदानों की सेवा, और वैसे ही उन सब की सेवा जो आत्मा की एकता में शामिल हैं, मसीह की देह की उन्नति और उसकी रक्षा के लिए है। जब तक हम पृथ्वी पर हैं, मसीह की इस आत्मिक देह को अपने सब अंगों, अपने सब सदस्यों के सक्रिय और समर्पित परिश्रम और सहभागिता की ज़रूरत है। हम अभी से मसीह की देह हैं, पर हमें इसे व्यवहार में भी जीना है। उन्नति और बढ़ती का लक्ष्य **विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र की पहचान है।** हम सब यात्रा पर हैं, थोड़ा-थोड़ा पहचानते हैं। कभी-कभी हम अनजान होते हैं, बिना जाने गलत धारणाओं को पकड़े रहते हैं, परमेश्वर के पुत्र को पर्याप्त स्पष्टता से नहीं पहचानते। इसलिए हमें दूसरों की और उनके वरदानों की ज़रूरत है। हमें **मिलकर** बढ़ना और सयाना होना है। एक सयाने मनुष्य की पूरी परिपक्वता तक। यही ठहराया हुआ लक्ष्य है। यह सयानापन मसीह की परिपूर्णता के सिवा और कुछ नहीं।

तैयारी और बढ़ती ज़रूरी हैं, ताकि हम अब बच्चों की तरह नासमझ न रहें। नासमझ होने का अर्थ है, किसी भी बात को परमेश्वर की दृष्टि से परख या आँक न पाना। यदि हम विश्वास में आगे नहीं बढ़ते, तो हम उस पाल वाली नाव की तरह हैं, जिसे बिना पतवार के हवा इधर-उधर उछालती है। झूठी शिक्षाओं और झूठे शिक्षकों की हवा हमें उड़ा ले जा सकती है। ये झूठी शिक्षाएँ अक्सर जान-बूझकर किया गया छल भी होती हैं, धूर्त भ्रम के रूप में गढ़ी हुई, ताकि ठीक नासमझों को ही बहकाएँ। **इसलिए अब दूध पीते बच्चे और छोटे बालक मत बने रहो!**

इसके बजाय सच्चे बनो और सत्य को थामे रहो। पर एक-दूसरे से प्रेम के साथ, अपने को ज़्यादा जानकार दिखाते हुए नहीं। हाँ, जो कुछ तुम करो, वह इसमें सहायक हो कि हम उसकी ओर, मसीह की ओर, जो सिर है, बढ़ते जाएँ। फिर उसी से पूरा शरीर बढ़ता है, क्योंकि इस स्वर्गीय केन्द्र से उसे आत्मिक पोषण मिलता है। मसीह के द्वारा बहुत-से चेलों से बनी यह देह पूरी तरह से आपस में जुड़ी और गठी हुई है। आत्मिक जोड़ों के द्वारा, अर्थात् हर उस जोड़ के द्वारा जो कुछ पहुँचाता है, माँसपेशियों और नसों के द्वारा,

शरीर को सहारा और पोषण मिलता है। हर चेला अपने पाए हुए अनुग्रह के अनुसार शरीर की बढ़ती में योगदान देता है। या फिर नहीं देता, यदि वह पाए हुए अनुग्रह को अपने पास ही रखता है और आगे नहीं देता। इस शरीर का हर अंग, हर चेला, अपनी सेवा से जो कुछ लाता है, उससे पूरे शरीर की प्रगति और बढ़ती होती है। यह हम सीधे और पूरे रूप में तो नहीं देख सकते, क्योंकि यह सारी पृथ्वी पर फैला है, पर परमेश्वर इसे देखता है और पूरे को अपने हाथ में थामे है।

जैसे हर शरीर बढ़ने के लिए अपने को बनाता और जीवित रखता है, और अपना काम करता है, वैसे ही मसीह की देह भी, जो परमेश्वर के प्रेम में अपनी उन्नति स्वयं करती है। यह बात विश्वव्यापी कलीसिया पर लागू होती है, वही मसीह की एक देह है। तब भी, जब हम उसे और उसकी एकता को नहीं या बहुत कम देखते हैं।

परमेश्वर के बिना जीवन कैसा दिखता है 4:17-19

यह बढ़ना और बनना तभी सफल हो सकता है, जब तुम अब उन जातियों की तरह न जीओ, जिनमें तुम कभी शामिल थे। मैं प्रभु में तुम्हें गंभीरता से चिताता हूँ। वे अपने निरर्थक और उथले जीवन-दृष्टिकोण के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हैं और सुसमाचार को ठुकराते हैं। परमेश्वर के विषय में, और इसलिए अपने विषय में भी, उनकी सोच और उनकी समझ पूरी तरह अन्धकारमय है। वे परमेश्वर से अलग हैं, मानो पापों में मरे हुए, जैसा मैंने पहले कहा। वे परमेश्वर के साथ जीवन को नहीं जानते, इसलिए उनके पास हर चीज़ की कमी है। परमेश्वर के विषय में वे अनजान हैं, और इसमें अपनी धारणा में पत्थर की तरह कठोर हैं। अपनी राय में जड़े हुए। जो कुछ परमेश्वर से आता है, उसके लिए वे पूरी तरह बंद हैं। इसके परिणामस्वरूप उनमें से बहुतों ने उस सब के लिए हर संवेदना खो दी है, जो भला, उचित, उपयोगी और सही है। उनके पास जो बचता है, और जिसमें वे अपने आप को पूरा करते हैं, वह है बेलगाम लुचपन और उस सब भलाई का विकृत रूप, जो परमेश्वर ने आरंभ में अपनी सृष्टि में दी थी। जो परमेश्वर ने कभी आशीष और आनंद के लिए रचा था, उसे मरोड़कर अशुद्धता बना दिया जाता है और कभी न बुझने वाली लालसा और लोभ से भोगा जाता है। इस प्रकार जातियाँ, जो कम या अधिक ऐसे ही जीती हैं, निरर्थकता और खालीपन, निराशा, बंधन, लतों और खोई हुई दशा में पड़ी हैं।

कोई और ढंग से कैसे जी सकता है? 4:20-24

ऐसे जीवन से हमें केवल परमेश्वर ही निकाल सकता है। **नया मनुष्य बनने के लिए सचमुच मृतकों में से जिलाए जाने की ज़रूरत है। यही परमेश्वर ने किया। मसीह में।** जब तुमने मसीह को जाना, तो वह ठीक उसके विपरीत था, जो तुम थे। यीशु ने जिस सत्य का प्रचार किया, वह बिल्कुल अलग है। उसके वचन हमें सीखने हैं और उन पर चलना है। उसके वचन और उसकी शिक्षाएँ एशिया माइनर में तुम्हें सुनाई गई हैं। वे एक बिल्कुल भिन्न जीवन में ले जाती हैं। हमारा पुराना जीवन, जातियों वाला, हमारे **पुराने मनुष्य** का है। उसे हमने एक पुराने, घिसे हुए और मैले चोगे की तरह उतारकर अलग रख दिया है। यह पुराना मनुष्य उन सब धोखा देने वाली अभिलाषाओं के कारण, जिनमें वह जीता है, किसी नाशवान माल की तरह सड़ता जाता है। वह अभी से वही काट रहा है, जो वह बोता है। वह वही बन जाता है, जिसका वह आदर करता है और जिसकी उपासना करता है। पर तुम परमेश्वर के आत्मा के द्वारा अपनी सोच और अपने पूरे जीवन-दृष्टिकोण में निरंतर नए और ताज़ा किए जाते हो। आपस की सहभागिता के द्वारा और मसीह के वचन के द्वारा। ताकि तुम **नए मनुष्यों** की तरह जीओ। अब तुम भीतर से भलाई को चुनते हो। पूरे विश्वास के साथ। क्योंकि तुमने नए मनुष्य को एक नए वस्त्र की तरह पहन लिया है, जिसे सब देख सकते हैं। **यह नया मनुष्य परमेश्वर के द्वारा रचा गया है।** केवल इसी कारण यह नया मनुष्य वैसे जीता है, जैसा पूरी तरह परमेश्वर के अपने स्वभाव के अनुरूप है। अर्थात् उसके **सत्य, धार्मिकता और पवित्रता** के अनुरूप।

नया जीवन कैसा दिखता है 4:25-32

परमेश्वर ने हमारे जीवन को इतनी जड़ से नया किया है, यह छोटी-बड़ी बातों, परिस्थितियों और कामों में दिखाई देता है। **झूठ** अब न रहे। अपने पड़ोसी से सदा **सच** बोलो और एक-दूसरे के सामने दिखावा मत करो। हम तो एक शरीर के अंगों की तरह जीवित रूप से एक-दूसरे से जुड़े हैं! विश्वासी भाई-बहनों के रूप में। जब तुम दूसरों पर क्रोधित हो, तो बहुत ध्यान रखो कि पाप न करो। **क्रोध** एक स्वाभाविक, मानवीय भावना है। पर अक्सर, बल्कि अधिकतर, हमारा क्रोध पापमय होता है, क्योंकि वह बहुत तीव्र, बढ़ा-चढ़ा और अनुचित भी होता है। यदि तुम अपने पड़ोसी पर उसके मुँह पर क्रोधित हुए, जो ऐसा नहीं होना चाहिए था, तो हर हाल में अगला संभव अवसर ढूँढो कि बात सुलझाओ और मेल कर लो। यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो तुम शैतान के लिए जगह खोल देते हो और उसे अवसर देते हो कि वह कड़वाहट, और फिर उससे भी अधिक पापमय क्रोध, बोए। **चोरी** भी अब न रहे। आसान रास्ता अपनाकर कुछ उठा लेने के बजाय, उसके लिए परिश्रम करो और उसे कमाओ। इस प्रकार अपने हाथों को चोरी के लिए काम में मत लाओ। इसके विपरीत: उनसे उन लोगों को बाँटो, जिन्हें सचमुच ज़रूरत है और जो कष्ट में हैं। इस पर भी ध्यान दो कि **तुम कैसे बोलते हो** और क्या कहते हो। नए मनुष्य की पहचान यह है कि वह सड़े हुए, भद्दे, चोट पहुँचाने वाले या प्रेमहीन शब्द नहीं बोलता। इसके बजाय अच्छे शब्द बोलो, जो हियाव बँधाएँ और सुनने वालों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को बड़ा करें।

जब तुम अपने पुराने मनुष्य की तरह कुछ करते, बोलते या सोचते हो, तो तुम दुःख पहुँचाते हो और **परमेश्वर के पवित्र आत्मा का अपमान करते हो**। वह तो हम में वास करता है और चाहता है कि नए मनुष्यों के रूप में जीने में हमारी सहायता करे। वह हम पर **परमेश्वर की मुहर** है। वह हमारी सुरक्षा और गारंटी है कि हम छुटकारे के दिन तक – जब हम अपनी मीरास पाएँगे – पहुँचेंगे। जब बात पापों की हो, तो यह पवित्र आत्मा बहुत संवेदनशील है। जितना हम कभी-कभी सोचते हैं, उससे अधिक। यह कितनी दुःख की बात है, जब हम ठीक उसकी उपस्थिति में वही करते हैं, जिसे वह हमारे जीवन से हटाना चाहता है। इसलिए आओ, हम उसका वह जीवन जीएँ, जो उसने हमें नए मनुष्य में दिया है। हमें वह बनना है, जो हम हैं! आत्मा हमें सामर्थ देता है!

पुराने मनुष्यों का आपसी जीवन अक्सर कड़वाहट से, रोष और क्रोध और चीख-पुकार और एक-दूसरे की निन्दा से भरा होता है। वह बस द्वेष से भरा है। अब एक-दूसरे के साथ बिल्कुल अलग बनो। उनके साथ भी। **कृपालु बनो, जब दूसरे दुःख और हानि उठाएँ तो अपनी सहानुभूति दिखाओ और कोमल बनो। जब तुम्हारे साथ अन्याय हो, तो अब हर समय क्षमा करने और अनुग्रह दिखाने के लिए तैयार रहो।** यही सबसे बड़ी बात है जो तुम कर सकते हो, क्योंकि परमेश्वर ने भी मसीह के द्वारा तुम्हें सब कुछ क्षमा किया है। तुम स्वयं परमेश्वर के सामने कुछ भी सुधार नहीं सकते थे और पूरी तरह परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण

क्षमा पर निर्भर थे, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ। यही सबसे बड़ा उपहार है जो तुम्हें दिया गया: उसका अनुग्रह।

कितना अच्छा हो, यदि किसी मसीही के बारे में कहा जाए: बिल्कुल पिता जैसा – बिल्कुल यीशु जैसा 5:1-2

परमेश्वर तुमसे प्रेम करता है! तुम उसकी सन्तान हो! उसका अनन्त जीवन तुम में है। उसका हृदय तुम में धड़कता है: **तुम्हें हमारे परमेश्वर और स्वर्गीय पिता का अनुकरण करने वाले बनना है, और तुम बन सकते हो।** यह सबसे बढ़कर परमेश्वर के प्रेम में दिखाई देता है। आओ, हम प्रेम में जीएँ। हमारे आपसी व्यवहार का और हमारे हर काम का प्रेरक प्रेम हो। हम से प्रेम के कारण यीशु मसीह ने हमारे लिए, हमारे स्थान पर बलिदान होकर, अपने आप को मृत्यु में दे दिया। इससे बड़ा प्रेम कभी नहीं हुआ। प्रेम का यह बलिदान ही परमेश्वर को भाता है। उसके जीवन का कार्य परमेश्वर के लिए एक सर्वांग बलिदान था। इसने परमेश्वर को असीम आदर दिया, उसकी महिमा की और उसे आनंदित किया। हमारे साथ भी ऐसा ही होना चाहिए, और हो सकता है!

यौनता दो दृष्टियों से 5:3-10

अब मैं एक ऐसी बात पर आता हूँ, जो हमारे समाज में, तुम्हारे यहाँ इफिसुस में, पर सारे संसार में भी फैली हुई है: **स्वच्छंद यौन संबंध, बेलगाम कामुकता, अश्लील सामग्री और लालच।** इनसे पूरी तरह इनकार करो। विचारों में भी! अपनी बातचीत में भी। यौनता को इस तरह स्वच्छंद जीने का उस प्रेम से कोई संबंध नहीं, जो अपने आप को देता और लुटा देता है, जिसकी बात मैंने अभी की। यह ठीक उसका उलटा है। इसमें लोग शिकार बनते हैं। इस तरह की यौनता पर हँसी-ठट्ठा करना या चुटकुले बनाना, हाँ, उसके बारे में बात तक करना, पवित्र और परमेश्वर को समर्पित लोगों को शोभा नहीं देता। इसके बारे में हर विचार और हर शब्द को निकाल फेंको, ताकि यह खोखला और निरर्थक जीवन तुम्हें फिर कभी न आ पकड़े। हास्य और शालीन चुटकुले पाप नहीं हैं, पर लज्जाजनक बातों पर गंदे चुटकुले और मूर्खता भरी, खोखली और उथली बकवास परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं। तुम्हारे हृदयों और विचारों से धन्यवाद निकले, कृतज्ञता के सिवा कुछ नहीं। **उन बातों की चर्चा करो, जिनके लिए तुम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हो। और फिर धन्यवाद करो भी!**

तुम्हें पहचानना और दृढ़ता से थामे रहना है: जो लोग पुरुष और स्त्री की विवाह-वाचा के बाहर या उसके बिना स्वच्छंद यौन संबंध रखते हैं, वे मन फिराए और पश्चाताप किए बिना परमेश्वर और प्रभु यीशु के राज्य में कभी नहीं आएँगे। वे अपनी कामवासना के आगे झुक जाते हैं और उसी में जीते हैं, मानो वह उनकी मूर्ति हो, जिसकी वे उपासना करते हैं। उनकी – तुम्हारे विपरीत – परमेश्वर के भविष्य में कोई मीरास न होगी। इसलिए इस विषय में परमेश्वर के इस स्पष्ट दृष्टिकोण से अपने को हटने न दो, मानो यह सब इतना बुरा न हो और गंभीरता से लेने योग्य न हो। वे समझते हैं कि वे प्रबुद्ध हैं और ज्योति में हैं। वे दावा करते हैं कि अपनी वासना को वश में करने की नहीं, बल्कि उसे जीने की और अपने आप को पूरा करने की ज़रूरत है। पर यह झूठ है। **मनुष्य स्वयं को धोखा देते हैं।** क्योंकि परमेश्वर ने इसे कभी ऐसा नहीं ठहराया था।

परमेश्वर के दान के रूप में यौनता अद्भुत और पवित्र है और विवाह के लिए दी गई है। पर जो बेलगाम होकर अपनी कामवासना के पीछे चलता है, वह पूरी तरह आज्ञा न मानने वाला है। वह अपने जीवन में ही अनुभव करेगा कि जब प्रेम को प्रतिबद्धता और विश्वासयोग्यता में नहीं जिया जाता, तो ऐसा जीवन कितना खाली और अकेला होता है। **अंत में परमेश्वर का पवित्र और न्यायपूर्ण क्रोध उन पर आएगा। तब हम परमेश्वर की महिमा में और उसके राजशासन में अपनी मीरास पाएँगे।**

इसलिए इन लोगों में शामिल मत हो। और उनकी राय और जीवन-दृष्टि में भागी मत बनो, न उसका समर्थन करो। वह समय, जब तुम ठीक ऐसे ही जीते थे, तुम्हारे लिए तो सदा के लिए बीत चुका है। तुम अब अन्धकार में नहीं हो। तुम – वे नहीं – अब मसीह की स्वर्गीय ज्योति में पहुँचा दिए गए हो। अब वैसे ही जीओ

भी। देखने वालों की तरह, और इन लोगों से बिल्कुल भिन्न। उनके चाल-चलन में साथ देने से इनकार करो। स्वर्गीय ज्योति हमारे जीवन में अधिक से अधिक फल लाती है: भलाई, धार्मिकता और सत्य। **अब तुम यह पूछते हो कि प्रभु को क्या भाता है। पहले यह मत पूछो कि तुम्हें, या तुम्हारे आसपास के लोगों को, क्या भाता है।**

फिर से गिरना संभव है – परमेश्वर की ज्योति में लौटने का मार्ग भी 5:11-14

यदि तुम में से कोई फिर से ऐसे कामों में गिर जाए, तो अन्धकार के इन निष्फल कामों में भागी मत बनो, न उन पर चुप्पी का पर्दा डालकर, न उन्हें केवल सहन करके। इन बातों को साफ़-साफ़ उनके नाम से पुकारने का साहस रखो। जो वे छिपकर करते हैं, वह इतना लज्जाजनक है कि उसकी चर्चा तक नहीं की जा सकती। और जब तुम इन कामों को दोषी ठहराते हो, तो इसलिए नहीं कि यह तुम्हारी निजी राय है, बल्कि इसलिए कि यह परमेश्वर का दृष्टिकोण और सत्य है। उसकी पवित्र ज्योति इन अपवित्र कामों का असली रूप प्रकट कर देती है। उन्हें सचेत करो कि इससे उनकी निश्चय ही हानि होगी। यदि तुम में से कोई इस पुराने जीवन में फिसल जाए, तो उसे ज़ोर देकर ये जाने-पहचाने शब्द पुकारो: **जाग उठ**, अपनी आत्मिक नींद और ऊँघ से। मरे हुओं में से उठ खड़ा हो, क्योंकि तू उन लोगों की तरह जी रहा है जो परमेश्वर को नहीं जानते। **तब मसीह फिर से तुझ पर ज्योति चमकाएगा**, और तू देखेगा कि परमेश्वर की सन्तान के रूप में तेरा स्थान कहाँ है।

हर ओर ख़तरे – हमें अपने दिन गिनना सिखा 5:15-17

तुम देखते हो, हम परमेश्वर की सन्तानों के लिए हर ओर ख़तरे घात लगाए बैठे हैं। ध्यान से देखो कि तुम कैसे जीते हो। मसीहियों के रूप में बिना सोचे-समझे, भोलेपन से या उथलेपन से मत जीओ। उनकी तरह जीओ जो बुद्धिमान हैं, जो अपने आप को और जो कुछ उनके सामने आता है, उसे परमेश्वर के सत्य की ज्योति में परखते हैं। क्योंकि हमारा समय बुरा है। हम किसी तटस्थ क्षेत्र में नहीं, बल्कि ऐसे समाज के लोगों के बीच जीते हैं, जो परमेश्वर से दूर है। वह चाहता है कि हम फिर से उन्हीं के हो जाएँ। जो समय तुम्हारे पास बचा है, उसे मोल ले लो। समझ लो कि हमारे जीवन के दिन गिने हुए और सीमित हैं। हमारे प्रभु और स्वामी मसीह की इच्छा ही एकमात्र बात है जो मायने रखती है। केवल उसकी इच्छा पूरी करने में ही हम समय को मोल ले सकते हैं।

परमेश्वर की सामूहिक स्तुति में आत्मा से भरपूर होना 5:18-21

शराब पीकर मतवाले और नशे में मत हो। तब भी नहीं, जब तुम अपने प्रभु-भोजों के लिए इकट्ठे होते हो। इसी से अक्सर वे पाप होते हैं, जिनकी मैंने बात की है। जो मतवाला होता है, वह बेलगाम हो जाता है और अपना होश और संयम खो देता है। या वह थका-हारा, सुस्त और निष्क्रिय हो जाता है। इसके बजाय, जब तुम इकट्ठे होते हो, तो परमेश्वर के आत्मा से भरपूर होते जाओ। **मसीह के धन और उसके वचन की चर्चा करो।** हाँ, आत्मा के द्वारा मिलकर और एक-दूसरे को उभारते और भरपूर होते जाओ, जब तुम मिलकर मन से प्रभु के लिए गाते और जयजयकार करते हो। और अपने वाद्य बजाओ। **भजनों और आत्मिक गीतों से की गई स्तुति हमें मसीह से और स्वर्ग के आनंद से भर दे।** हाँ, सदा, हर अवसर पर, अपने हृदयों में, पर ऊँचे स्वर से भी, यीशु के नाम से हमारे परमेश्वर का धन्यवाद करो। जब किसी ने परमेश्वर के अनुग्रह को जाना हो और प्रतिदिन उसका अनुभव करता हो, तो यही एकमात्र योग्य उत्तर है। इसमें तुम सब मसीह के भय में एक-दूसरे के **अधीन रहो**, जैसे तुम मसीह के अधीन हो। एक-दूसरे के ऊपर अपने को ऊँचा मत करो। अपनी ही इच्छा मत थोपो। दूसरे को अपने से बढ़कर समझो।

परमेश्वर का प्रेम: मसीह और उसकी कलीसिया – सिर और देह – पति और पत्नी – आदर और प्रेम 5:22-33

हे पत्नियो, प्रभु के सामने अपने पतियों के अधीन रहो। क्योंकि इस विवाह-वाचा में सिर पति है, ठीक वैसे ही जैसे मसीहा कलीसिया का, अपनी पत्नी का, और अपनी देह का सिर है। मसीहा अपनी देह का, अर्थात् अपनी कलीसिया का, जो सब चेलों से बनी है, उद्धारकर्ता है। जैसे कलीसिया अपने सिर, मसीह, के अधीन है, वैसे ही पत्नियाँ भी अपने पतियों के अधीन हैं। मसीह के साथ एकता के द्वारा कलीसिया आशीषित है। वैसे ही तुम्हारे विवाह की एकता पत्नियों के लिए आशीष हो।

हे पतियो, इसका अर्थ यह नहीं कि तुम अपनी पत्नियों पर वैसे प्रभुता करो, जैसे कोई स्वामी अपने दासों पर या शासक अपनी प्रजा पर करते हैं। नहीं, अपनी पत्नियों से ठीक वैसा ही प्रेम करो, जैसा मसीहा ने अपनी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को पूरी तरह उसके लिए दे दिया। मृत्यु तक। वह इतनी दूर तक गया। **उसका प्रेम इतना बड़ा था।** उसका लक्ष्य था कि उसे पूरी तरह पवित्र करे, उसे उसकी दुर्दशा से निकालकर और अपनी ओर खींचकर। उसे पवित्र करके उसने उसे कुछ विशेष बना दिया। उसे पाप की सारी मैल से शुद्ध करना था, और उसने सुसमाचार के वचन के जल से उसे धोकर यह किया। यह वह आज भी करता है, निरंतर और हर दिन इसमें उसका स्थायी प्रेम प्रकट होता है। वह अपनी प्रिय दुल्हन को अपने सामने, दूल्हे के सामने, उसकी पूरी सुंदरता और महिमा में खड़ा करना चाहता है, जो उसने उसे दी है। **उसमें अब कुछ भी ऐसा नहीं, जो याद दिलाए कि वह कभी कहाँ से आई थी। अब वह मसीह की दुल्हन है, पवित्र और निर्दोष।**

मैं तुम्हें यह क्यों लिखता हूँ? क्योंकि हे पतियो, तुम्हारा कर्तव्य और दायित्व है कि अपनी पत्नियों से वैसा ही प्रेम करो और उनकी वैसी ही देखभाल करो, जैसी अपने शरीरों की करते हो। तुम्हारे विवाह की एकता इतनी गहरी है कि जब तुम अपनी पत्नियों से प्रेम करते हो, तो मानो अपने ही शरीर से, हाँ, अपने आप से प्रेम करते हो। और वह भी बिना किसी स्वार्थ भरे छिपे इरादे के। ऐसा न करना बेतुका होगा, क्योंकि कोई कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखता। उसकी देखभाल और पालन-पोषण किया जाता है, जैसे मसीहा भी अपनी कलीसिया का करता है। क्योंकि हम तो उसकी देह के अंग हैं। मूसा आरंभ में लिखता है कि परमेश्वर ने विवाह-संबंध के बनने की कल्पना कैसे की थी: पुरुष अपने पिता और माता को छोड़ेगा, पूरी तरह आत्मनिर्भर होगा और फिर उन पर निर्भर नहीं रहेगा। वह अपनी पत्नी के साथ जुड़कर एक नई एकता बनेगा। ये दोनों एक तन होंगे। यह सचमुच एक बड़ा भेद है, जिस पर बार-बार अचंभा होता है, जब दो मनुष्य इस प्रकार एक हो जाते हैं। **इससे भी बड़ी बात यह है: ठीक यही बात मसीह और उसकी कलीसिया पर भी लागू होती है।** इसलिए, इन वास्तविक और गहरे आदर्शों को देखते हुए, तुम पुरुषों में से हर एक अपनी पत्नी से वैसा प्रेम करे, जैसा वह अपने आप से करता है। पत्नी अपने पति का आदर करे। **प्रेम और आदर**

प्रतिदिन तुम्हारे विवाह की दिशा तय करें और इस प्रकार उसकी रक्षा करें। केवल इसी प्रकार तुम पूरी तरह खिल सकते हो और उसमें आशीष बन सकते हो, जो परमेश्वर ने तुम्हें दिया है। विवाह को सँवारने का इससे अच्छा ढंग नहीं है!

माता-पिता और बच्चे 6:1-4

मैं केवल बड़ों को नहीं लिखता। परमेश्वर बच्चों से भी बात करता है। प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो। यह अच्छा और उचित है, भले ही कभी-कभी कठिन हो और माता-पिता भी गलतियाँ करते हों। मूसा ने दस आज्ञाओं में से एक बच्चों के लिए रखी। वही एकमात्र आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा है: अपने पिता और अपनी माता का आदर कर, कि तेरा भला हो और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। उसके वचन पर विश्वास करो और जो परमेश्वर कहता है, वह करो! हे पिताओ, अपने बच्चों के पालन-पोषण में प्रेमपूर्ण और संवेदनशील रहो, ताकि वे ख़ुशी से आज्ञा मानें। उनमें रुचि लो। अपना प्रेम दिखाओ और प्रमाणित करो! हद से ज़्यादा सख़्ती और माँगों से उनका हियाव मत तोड़ो! यदि वे तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह करते हैं, तो इसका कारण तुम भी हो सकते हो। आदर्श बनो! उन्हें अच्छी सोच और अच्छे व्यवहार की शिक्षा दो, जैसा प्रभु को भाता है।

दास के रूप में स्वर्गीय प्रभु को भाना 6:5-8

हे मसीह में दासो, अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा पूरे मन से मानो। हर बात पर सवाल उठाए या आलोचना किए बिना, और वैसे ही जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो। पर तुम अपने विश्वासी या अविश्वासी स्वामियों को इसलिए भाना न चाहो कि उनकी प्रशंसा कमाओ। मसीह के दासों के रूप में उनकी आज्ञा मानो, जो परमेश्वर की इच्छा ख़ुशी से और मन से पूरी करते हैं। इसलिए तत्परता से और अच्छी भावना से सेवा करो और आज्ञा मानो, मानो यह सीधे प्रभु के लिए हो, मनुष्यों के लिए नहीं। यह कभी न भूलो, तुम यह व्यर्थ नहीं करते। इसका प्रतिफल है। जो भी भलाई हम करते हैं, प्रभु उसका प्रतिफल देगा। कभी-कभी इसी समय में, पर निश्चय ही तब, जब हम नए संसार की महिमा में अपनी मीरास पाएँगे। यह बात निश्चय ही सब चेलों पर लागू होती है।

सांसारिक और स्वर्गीय स्वामी 6:9

हे विश्वासी स्वामियो और दासों के मालिको: तुम भी अपने दासों के साथ भलाई करो। उन्हें लगातार दंड की धमकियाँ देना छोड़ दो। ज़रा सोचो, तुम उन्हें अन्याय से धमकाते हो, जबकि स्वर्ग में उनका महान प्रभु और स्वामी है, जो उनका पक्ष लेता है। और वही तो तुम्हारा भी प्रभु और स्वामी है। वह न व्यक्ति का पक्षपात करता है, न सामाजिक हैसियत देखता है। उसके सामने किसी के पास दूसरे से अधिक अधिकार या अनुग्रह नहीं है। इसलिए धमकी मत दो, और भाइयों को तो बिल्कुल नहीं।

अंत तक युद्ध: बलवान बनो 6:10

अब मैं धीरे-धीरे अंत की ओर आता हूँ। मैं तुम्हें उस आत्मिक संघर्ष के लिए और भी दृढ़ता से तैयार करना चाहता हूँ, जिसमें हम हर दिन खड़े हैं। आत्मिक रूप से हम युद्ध की स्थिति में हैं, जब तक परमेश्वर का राज्य दिखाई देने वाले रूप में न आ जाए। इसे कभी मत भूलो और इस पर अचंभा भी मत करो। इसलिए मैं सबसे पहले तुम्हें, मसीह के योद्धाओं के रूप में, पुकारता हूँ कि प्रभु में बलवान बनो। **उसकी महान शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो**, जिसके बारे में मैं कई बार बोल चुका हूँ। यह सामर्थ्य उपलब्ध है, भले ही अधिकतर उसका अनुभव चुपचाप, बिना किसी धूमधाम के, और यहाँ तक कि अनुभव की गई निर्बलता में होता है।

आत्मिक युद्ध के लिए हथियारबंद 6:11-12

परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो, जिनसे वह हमें सुसज्जित करना चाहता है। हमें इनकी ज़रूरत है, ताकि शैतान की युक्तियों, चालों और हथकंडों का सामना कर सकें। इन्हीं से वह हम पर, परमेश्वर के सब बेटों और बेटियों पर, लगातार हमला करता है। कलीसिया उसका पहला निशाना है, यद्यपि मसीह उसे पहले ही पराजित कर चुका है। **पर परमेश्वर के हथियारों के बिना हम लड़ाई शुरू होने से पहले ही हार चुके हैं।** हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं, बल्कि अदृश्य संसार की बुरी और शत्रु शक्तियों से है। शत्रु प्राणियों की पूरी-पूरी सेनाएँ हैं, अलग-अलग पदों में, जिनमें परमेश्वर ने कभी उन्हें रचा था। पर उन्होंने शैतान की अगुवाई में अपने सृष्टिकर्ता के विरुद्ध विद्रोह किया और अब वह सब नष्ट करना चाहती हैं, जो परमेश्वर ने मसीह में रचा है। वे प्रधानताएँ हैं और अन्धकार के संसार के शासक। आत्मिक, पापमय अन्धकार ही उनका घर है। दुष्टता की आत्मिक सेनाएँ, जो हमारे विरुद्ध केवल बुराई ही सोचती हैं। इसलिए मैं फिर कहता हूँ कि परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो, केवल कुछ टुकड़े ही नहीं। हमारे जीवन में बुरे दिन आते हैं, जब ये शक्तियाँ विशेष रूप से प्रयास करती हैं। तब हमें मसीह के सामर्थ्य में सामना करना है, और हम कर सकते हैं। पर जब ऐसी लड़ाइयाँ फिर एक बार समाप्त हो जाएँ, तो हमें सावधान रहना है कि हम ढीले न पड़ें। तब हम स्थिर खड़े रहते हैं, ताकि किसी शान्त दौर में अचानक धोखे से घिर न जाएँ।

हथियारों का विवरण 6:13-17

परमेश्वर के हथियार एक पूरा समूह हैं और अलग-अलग भागों से बने हैं। जो सब आपस में जुड़े हुए हैं। वास्तव में ये हथियार उन सब बातों से बने हैं, जो मैं तुम्हें इस पत्री में लिख चुका हूँ। कमर पर बँधा **कमरबंद** परमेश्वर के बारे में, मसीह के बारे में और उसने जो किया उसके बारे में **सत्य** का प्रतीक है। पर यह हमारे जीवन में सच्चाई और व्यावहारिक सत्य भी है, जैसा मैं तुमसे पहले कह चुका हूँ। **झिलम** परमेश्वर की **धार्मिकता** का प्रतीक है, जो हमने पहन रखी है, क्योंकि परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया है। पर हम परमेश्वर की धार्मिकता को जीते भी हैं और वही करते हैं, जो उसके अनुरूप है। हर तरह की भूमि के लिए मज़बूत **जूते** हमारी तत्परता और हमारे उत्साह को दिखाते हैं कि शान्ति का वह **सुसमाचार**, जिसे हमें स्वयं ग्रहण करने का सौभाग्य मिला, उन तक पहुँचाएँ, जो अब भी बुरी शक्तियों की क़ैद में हैं। **ढाल** उस **विश्वास** और भरोसे का प्रतीक है, जो हम जीवन की हर स्थिति में अपने परमेश्वर पर रखते हैं, क्योंकि वह सदा सहायता कर सकता है। विश्वास के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है, पर धर्मी जन निरंतर विश्वास से जीवित भी रहता है। केवल इसी प्रकार हम उस दुष्ट के अत्यंत क्रूर और जलते हुए तीरों को रोक और बुझा सकते हैं। इसमें यह भी शामिल है कि हम अपने सिर की रक्षा उस **टोप** से करें, जो **उद्धार** की बात कहता है। ताकि सोचना, सुनना और देखना सुरक्षित रहें। उद्धार हमारा है: हमारा उद्धार हो चुका है, प्रतिदिन हमारा उद्धार होता है, और एक दिन छुटकारे के दिन हम बचाकर उसके राज्य में पहुँचाए जाएँगे। यह निश्चय हमसे कोई न छीने।

आत्मा की तलवार से अपनी रक्षा करो, जो **परमेश्वर का वचन** है। पर लड़ाई में आगे भी बढ़ो। यह हथियार स्वयं परमेश्वर का बोलना है, परमेश्वर का वचन, जिसे आत्मा के द्वारा जीवित रूप में और ठीक निशाने पर चलाया जाता है। यीशु की ओर देखो, जो इसमें हमारा बड़ा आदर्श है।

एक और हथियार: लगातार प्रार्थना और विनती 6:18-20

एक और हथियार तुम्हें उठाना है। शायद सबसे महत्वपूर्ण। हर समय प्रार्थना और गिड़गिड़ाकर विनती करते रहो। परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित होकर। अकेले भी और मिलकर भी। ऊँचे स्वर में भी और धीमे भी। **तुम कभी पर्याप्त या बहुत अधिक प्रार्थना नहीं कर सकते।** प्रार्थना और विनती में लगे रहो, और वह भी सब पवित्र लोगों के लिए, उनकी चिन्ताओं और ज़रूरतों के लिए। पर मेरे लिए भी करो, ताकि मैं शुभ संदेश को उपयुक्त और सटीक शब्दों में समझने योग्य ढंग से सुना सकूँ। और यह कि मैं साहसी रहूँ। मुझे तो सुसमाचार के उस भेद का, जिसका वर्णन मैंने इस पत्री में तुम्हारे लिए किया है, हर जगह प्रचार करना है, और मैं करना चाहता भी हूँ। इसी के लिए मैं भेजा गया हूँ, भले ही अब मैं ज़ंजीरों में बंदीगृह में बैठा हूँ। मेरे लिए यह महत्वपूर्ण है कि तुम्हारी मध्यस्थता की प्रार्थना के द्वारा मुझे प्रभु की सहायता मिले, क्योंकि मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ।

अंतिम शब्द 6:21-24

यह पत्री तुखिकुस, जो प्रिय भाई और प्रभु में मेरा विश्वासयोग्य सेवक है, तुम तक पहुँचाएगा। वह तुम्हें मेरी परिस्थितियों के बारे में बता सकेगा। तुम जानो कि मैं कैसा हूँ। तब तुम मेरे लिए प्रार्थना कर सकोगे और तुम्हें शान्ति मिलेगी।

सब विश्वासी भाई-बहनों के लिए मैं यह कामना करता हूँ कि परमेश्वर की शान्ति और प्रेम उन्हें अधिकाधिक मिले, उस पर, हमारे परमेश्वर और पिता पर, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखते हुए।

मैं उन सब के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की कामना करता हूँ, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं! जो उसके साथ बने रहते हैं, और वही करते हैं जो वह कहता है। और मनुष्यों के सामने उसे मान लेते हैं।